L.N. MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA, BIHAR,
B.A PART-I
PAPER-I
B.A (Psychology)
(Honours)

Dr. PRAMOD KUMAR SAHU
Assit. PROFESSOR
Guest-Teacher.
Sub- PSYCHOLOGY
V.S.J college
RAJNAGAR MADHUBANI
pramodkumardbg2018@gmail.com

Q. संवेग के जेम्स-लांजे (James-Lange) सिद्धान्त का आलोचनात्मक वर्णन

मानव-जीवन में संवेग का महत्वपूर्ण स्थान है।

(i) पहला मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त है। जो संवेग की व्याख्या वैज्ञानिक रूप से करता है।

(ii) यह सिद्धान्त आगे चलकर अपने आधार पर अन्य संवेग-संबंधी सिद्धान्त को उत्पन्न करने में सहायक हुआ। कैनन-बार्ड संवेग का सिद्धान्त इसी की आलोचना की उपज है।

(iii) दैनिक जीवन में हम अनेक ऐसे अनुभव होते हैं जो ये बताते हैं कि पहले संवेगात्मक व्यवहार होता है। और तब संवेगात्मक अनुभूति होती है। अनेक प्रायोगिक अध्ययन भी इसका समर्थन करते हैं।

(iv) कुछ मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि किसी वस्तु-विशेष के प्रत्यक्षीकरण से संवेग के अभाव में भी शारीरिक परिवर्तन हो सकते हैं।

(v) शारीरिक परिवर्तन से रहित किसी भी संवेग की कल्पना नहीं की जा सकती है।

(vi) शारीरिक परिवर्तन से रहित किसी भी संवेग की कल्पना नहीं की जा सकती है।

(vii) यदि शारीरिक परिवर्तन को बनावटी रूप से उत्पन्न करने का प्रयत्न किया जाए तो उससे ~~संवेग~~ संवेग भी उत्पन्न हो जाते हैं।

Scanned with CamScanner

जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित करता है। यह शैक्षणिक, पारिवारिक, दाम्पत्य एवं सामाजिक जीवन के विभिन्न पक्षों पर अपना प्रभाव डालता है। इसकी व्याख्या के लिए बहुत से सिद्धान्तों का प्रतिपादन हुआ है। जिनमें संवेग का जेम्स-लांजे सिद्धान्त भी एक है। यह सिद्धान्त का प्रतिपादन विलियम जेम्स तथा कार्ल लांजे द्वारा हुआ। 1884 ई० में अमेरिकी मनोवैज्ञानिक विलियम जेम्स ने अपने सिद्धान्त का प्रतिपादन किया 1885 ई० में डेनमार्क के शरीर क्रिया विज्ञानी कार्ल लांजे द्वारा भी लगभग ऐसा ही सिद्धान्त के प्रतिपादित किया गया। दोनों सिद्धान्तों में समानता होने के कारण इसे सम्मिलित रूप से जेम्स-लांजे सिद्धान्त का नाम दिया गया। यह सिद्धान्त संवेग के सामान्य सिद्धान्त की आलोचना करता है। और सामान्य धारणा के विरुद्ध संवेग की व्याख्या करता है। संवेग के सामान्य सिद्धान्तों में माना जाता है कि पहले विन्दु संवेग की व्याख्या करता है। संवेग के सामान्य सिद्धान्तों में माना जाता है। कि पहले संवेगात्मक अनुभूति होती है। तब संवेगात्मक व्यवहार होता है। बाघ को जंगल में सामने देखने पर पहले हमें भय लगता है। तब हम भागते हैं। भय लगना संवेगात्मक अनुभूति है तथा भागना संवेगात्मक व्यवहार। लेकिन जेम्स-लांजे सिद्धान्त के अनुसार संवेग में पहले संवेगात्मक व्यवहार होता है। तब संवेगात्मक अनुभूति होती है। दूसरे शब्दों में संवेगात्मक अनुभूति का होना संवेगात्मक व्यवहार पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए जंगल बाघ देखता है भाग खड़ा होता है। और इसके कारण डर जाता है। जेम्स ने अपने सिद्धांत की व्याख्या करते हुए लिखा है। मेरा सिद्धान्त यह है कि शारीरिक परिवर्तन उत्तेजना तथ्य के प्रत्यक्षण के तुरंत बाद होते हैं। और परिवर्तन होते हैं। उसी समय में उनकी अनुभूति को संवेग कहते हैं।

Scanned with CamScanner

इस सिद्धांत के अनुसार व्यक्ति पहले उत्तेजक तथ्य का प्रत्यक्षीकरण करता है। प्रत्यक्षीकरण के बाद शारीरिक परिवर्तन होते हैं तथा इन परिवर्तनों की अनुभूति के कारण संवेग उत्पन्न होता है।

जेम्स-लांजे ने अपने सिद्धान्त की व्याख्या के क्रम में यह भी बताया है। कि संवेग में पहले संवेगात्मक व्यवहार ही होते हैं। संवेगात्मक व्यवहार संवेगात्मक अनुभूति का आधार भी होते हैं। संवेगात्मक व्यवहार के अभाव में संवेगात्मक अनुभूति का आगमन हो ही नहीं सकता। जेम्स-लांजे ने अपने सिद्धान्त की सत्यता प्रमाणित करने के लिए दो आधार लिये। प्रथम आधार रूप में इन लोगों ने अभिनेता एवं अभिनेत्रियों से संपर्क स्थापित किया और उनके साथ किये गये अंतर्निरीक्षण के आधार पर यह पता लगाया कि किसी संवेग से संबद्ध व्यवहारों को बार-बार अपनाने पर उस संवेग से सिद्धान्त की सत्यता की जांच के लिए शारीरिक आधार का भी सहारा लिया। उनका कहना था कि किसी संवेगात्मक परिस्थिति का आगमन होने पर इसका संबंध ज्ञानेन्द्रियों से स्थापित होता है फलतः ज्ञानेन्द्रियां उत्तेजित हो जाती हैं। जिसके कारण एक स्नायु प्रवाह उससे उत्पन्न होकर ज्ञानवाही तंत्रिका द्वारा सुषुम्ना (spinal cord) से होते हुए मस्तिष्क में जाता है फलस्वरूप उस संवेगात्मक परिस्थिति का प्रत्यक्षीकरण होता है। इस कारण एक स्नायुप्रवाह कॉर्टेक्स (cortex) से निकलकर क्रियावाही नाड़ी द्वारा सुषुम्ना (spinal cord) से होते हुए पेशी ग्रंथि तक जाता है। जिसके कारण शारीरिक परिवर्तन (संवेगात्मक व्यवहार) होता है। इस शारीरिक परिवर्तन के कारण पुनः स्नायुप्रवाह नामक स्नायु से निकलकर ज्ञानवाही नाड़ी से सुषुम्ना में होते हुए कॉर्टेक्स में पहुंचता है। जिसके कारण संवेगात्मक अनुभूति होती है।

Scanned with CamScanner

इस प्रकार उन्होंने यह बताया कि संवेगात्मक व्यवहार संवेगात्मक अनुभूति से पहले होता है। एवं संवेगात्मक व्यवहार ही संवेगात्मक अनुभूति का आधार है।

इस सिद्धांत की सीमाएँ हैं —

(i) इस सिद्धांत की पहली आलोचना यह है कि यदि संवेगात्मक व्यवहार पर ही संवेगात्मक अनुभूति निर्भर करती तो हर खास प्रकार के संवेग में एक खास प्रकार का शारीरिक परिवर्तन होना चाहिए था लेकिन ऐसा नहीं है। एक ही तरह की शारीरिक परिवर्तन जैसे हृदय की गति होना, लज्जा, प्रेम और क्रोध तीनों संवेगों में पाया जाता है।

(ii) जेम्स-लांजे / सिद्धांत की आलोचना का एक अन्य आधार भी अध्ययन है। जिसमें देखा गया कि संवेगात्मक व्यवहार के पहले ही संवेगात्मक अनुभूति का आगमन हो जाता है।

(iii) इस सिद्धांत के अनुसार सुषुम्ना (spinal cord) के अभाव में संवेगात्मक अनुभूति नहीं होनी चाहिए। एक महिला मेरुरज्जु (सुषुम्ना) के टूटे होने के बावजूद संवेगों की अनुभूति करती थी, इस सिद्धांत के अनुसार ऐसा नहीं होना चाहिए था।

(iv) सुषुम्ना को ऑपरेशन करके हटा देने पर भी संवेगात्मक अनुभूति हुई। अतः संवेगात्मक व्यवहार की उत्पत्ति में सुषुम्ना की अधिक प्रमुखता नहीं है।

(v) शारीरिक परिवर्तन के आधार पर संवेगात्मक अनुभूति नहीं होती है। मादक-दवाओं के प्रयोग पर शारीरिक परिवर्तन तो होते हैं लेकिन संवेगात्मक अनुभूति नहीं होती है।

Dr. Pramod Kumar Sethi,
Date - 15/04/2020

Scanned with CamScan